सुजीवन 9
राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ, सोमवार, 5 नवम्बर, 2007
www.rashtriyasahara.com

कारगर है होम्योपैथी

मथुरेश गेंगलीनिअस का एक लक्षण विद्वान ने लिखने तक में उसेक (मथुरेश) की मात्रा सामान्य से अधिक हो जाती है। इस स्थिति को हाईपरग्लाइसेमिक कहते हैं। यह दो प्रकार की होती है। पहली टाइप। इन्सुलिन आश्रित मधुमेह, यह विशेष लक्षणवाला. पैंक्रियाज में इन्सुलिन बनना ही बन्द होने के कारण उत्पन्न होती है। दूसरी स्थिति टाइप-II इन्सुलिन का शरीर द्वारा उपयोग न कर पाने के कारण उत्पन्न होती है।

कारण

पारिवारिक लक्षण, अनियमित खान-पान, आनुवंशिक दोषज होती, पैंक्रियाटाइटिस आदि से मधुमेह होने की सम्भावना रहती है। यह अनुवंशिक रोग भी है। टाइप-I मधुमेह के लिए मुख्यतः उत्तरदायी कारण वंशगत, मधुमेह का पारिवारिक इतिहास, ऑटोइम्यूनोलाइट का असामान्य रूप से एक रस, उच्च रक्तचाप, लिपिड की असामान्यता (एचडीएल-35 एमजी/डीएल व ट्रिगलाइसेराइड-250 एमजी/डीएल या एलडीएल 130 एमजी/डीएल) व गर्भावस्था में भी मधुमेह होने की आशंका रहती है।

लक्षण

अत्यधिक प्यास लगना, बार-बार मूत्र त्याग की इच्छा होना, अत्यधिक भूख लगना परन्तु रोगी वजन घट जाना, थकान होना, जल्दी थकान होना, कमजोरी महसूस होना, दृष्टि धुंधली पड़ जाना, हाथ-पैर सुन्न होना, जननांगों में खुजली, घाव भरने में समय लगना लक्षण हैं।

उपचार

खान पान से परहेज, खाना समयानुसार, व्यायाम, दवाओं और पैरों में पैनापैन, मधुमेहजन्य, संक्रमण, मधुमेह संबंधी रेटिनोपैथी, गुर्दे खराब हो जाना, स्नायविकारों में विकृतियां होना, घाव, मधुमेह संबंधी आदान जरूरी।

निदान

उच्च प्रयोगशाला रक्त शर्करा स्तर 126 एमजी/डीएल से या रैंडम रक्त शर्करा स्तर 200 एमजी/डीएल होना।

इलाज

आधुनिक चिकित्सा पद्धति में चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य रक्त में मधुमेह का स्तर सामान्य रखने तक ही सीमित है। यह सामान्यतः इन्सुलिन अथवा अन्य औषधियों के रूप में चमड़ी आदि द्वारा संभव है। अन्य औषधियां रोगियों को आवश्यक पथ्य खाने पड़ते हैं।

होम्योपैथिक चिकित्सा

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति दवाइयों को न केवल नियंत्रित करने में अपितु इसके मूल कारण को भी समाप्त करने में सक्षम है। होम्योपैथी चिकित्सा द्वारा टाइप-I तथा टाइप-II दोनों प्रकार की दवाइयों में लाभ देखा जाता है। होम्योपैथिक औषधियां न केवल पैंक्रियाज को इन्सुलिन बनाने के लिए उत्तेजित करती हैं, अपितु कोशिकाओं की मधुमेह द्वारा अवरुद्ध को भी खोलती हैं एवं रक्त में मधुमेह को नियन्त्रण रखती हैं। साथ ही रोगी को आवश्यक पथ्य खाने योग्य रोगियों से भी बचाती हैं।

दवाइयों में लक्षणवार होम्योपैथिक औषधियां

मधुमेह लक्षण, सिजाजियम्, इंडीकस, सिनोनम, लेकेसिस, एसिड नाइट्रम, सीपीसीफेरा, यूरेनियम नाइट्रीकम, फास्फोरस, आर्सेनिक एल्बम, आर्जिन्टम, नाइट्रम म्यूर, फास्फोरिक एसिड, सिजाजियम आदि लाभप्रद हैं। होम्योपैथिक चिकित्सा से दवाई का चयन रोग लक्षणों एवं पूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर दवाएं औषधियों को केवल लिख लेने से रोग के इलाज के लिए पर्याप्त साबित हैं।

इलाज कितना

मधुमेह कोमल कहें। यहां लम्बा और महंगा कहें। पूरे रहने और खाली पेट रहने से कहें।

■ डा. मोहन सिंह
(होम्योपैथिक चिकित्सक)